This question paper contains 2 printed pages.

Your Roll No. ....

Sl. No. of Ques. Paper : 5384 **G**

Unique Paper Code : 290567

Name of Paper : Creative Writing (Hindi)

Name of Course : B.A. (Prog.) Application Course

Semester : V

Duration : 3 hours

Maximum Marks : 50

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिये गये निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिये।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित अवधारणाओं में से किन्हीं **चार** पर 100 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 4×5=20

(i) सामान्य लेखन और रचनात्मक लेखन

(ii) पत्रकारिता में रचनात्मकता

(iii) साहित्य का महत्त्व

(iv) लोकभाषा और साहित्य

(v) भाषण और रचनात्मकता।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2×3=6

(i) लेखन-कला की दृष्टि से प्रतीक का अर्थ स्पष्ट करते हुए उसका महत्त्व स्पष्ट कीजिए।

(ii) अर्थालंकार से क्या समझते हैं? रूपक अलंकार पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

(iii) शब्द के विभिन्न प्रकारों का उल्लेख कीजिए।

(iv) लक्षणा शक्ति और व्यंजना शब्द-शक्ति में अंतर स्पष्ट कीजिए।

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2×5=10

(i) प्रिन्ट मीडिया हेतु किसी व्यक्ति के साक्षात्कार के लिए जाने से पहले आप क्या तैयारियाँ करेंगे?

(ii) पुस्तक-समीक्षा लिखते समय किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक होता है? विचार कीजिए।

(iii) 'दिल्ली विधानसभा चुनाव' विषय पर फीचर-लेखन कीजिए।

(iv) अपनी किसी यात्रा के आधार पर यात्रावृत्तांत लिखिए।

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणी कीजिए:

(i) औपचारिक और अनौपचारिक शैली

(ii) प्रतीक के विविध रूप

(iii) रेडियो समाचार-लेखन और दूरदर्शन समाचार-लेखन में अंतर

(iv) समाचार-पत्र की भाषा।

$2 \times 5 = 10$

5. दिए गए अंश के रचनात्मक सौन्दर्य का विश्लेषण कीजिए:

जानता हूँ कि मैंने वहाँ रहकर कुछ नहीं लिखा। जो कुछ लिखा है वह यहाँ के जीवन का ही संचय था। 'कुमारसंभव' की पृष्ठभूमि यह हिमालय है और तपस्विनी उमा तुम हो। 'मेघदूत' के यक्ष की पीड़ा मेरी पीड़ा है और विरह-विमर्दिता यक्षिणी तुम हो— यद्यपि मैंने स्वयं यहाँ होने और तुम्हें नगर में देखने की कल्पना की। 'अभिज्ञानशाकुन्तल' में शकुन्तला के रूप में तुम्हीं मेरे सामने थी। मैंने जब-जब लिखने का प्रयत्न किया तुम्हारे और अपने जीवन के इतिहास को फिर-फिर दोहराया। और जब उससे हटकर लिखना चाहा, तो रचना प्राणवान नहीं हुई।

अथवा

सब चेहरों पर सन्नाटा
हर दिल में गड़ता काँटा
हर घर में गीला आटा
यह क्यों होता है?
जीने की जो कोशिश है
जीने में यह जो विष है
साँसों में भरी कशिश है
इसका क्या करिये?

4